

નામિક 3. 1.MAR 1993.

আজকের কাম্পজ

ये-कोन आधुनिक गणतान्त्रिक राज्ये सरकारी चाकूरे व्याप्तीते ये कोन पेशार, योग्यात्मा ओ आठामोहर वर्षसे रोलोकर राजनीति करार उच्चनगत अधिकार मोलिमानव अधिकार लापेहि विधवापी शीरुत। कोजेहि पौच मासेर वा पौच वर्षसे किंवा दश-विश वर्षसे उच्चन्या सरकारी किंवा आशासनिक धर्मोजने वेसरकारी विद्यालय - ए विश्विद्यालये शिक्कदेव राजनीतिरे अंशधर्मे एक भूमितर उच्चोत विवित या निषिद्ध करा यावे ना, याय ना। अवश्य ये कोन धकार्ये अपराधर वा राहिक सांविधानिक अधवा आशासनिक नीति-निमाय उत्तेर उच्चन्या ये कोन नागरिकर विवर्द्ध ये कोन अकार निषेधाज्ञा वा शास्त्रियलक यावस्था अवश्यहि घट्ट करा कथनाइ अवाहि तन्य। काजेहि यारा सरकार्ये काहे सरकार्ये प्रशासनिक शार्थ किंवा देशेर बृहत्तर जर्दजनीन शार्थ शिक्कक-शिकार्यीन राजनीतिते अंश धर्म निषिद्धकरार सुपारिश करोहन, तौदेर सरकार किंवा गणतान्त्रिक चेतनार तारिफ करा देशाथर्यी ओ यानवसवी कोन साचेतन नागरिकर पक्के सज्जव न्य। एके बाहुदायी सरकार तेवेहन, तौदेर केउ अतिहित करले ताके तिरकार करा-यावे ना। यने राखते हवे वेसरकारी शोक याजेहि अर्द्ध सरकारी चाकूरे न्य, तेवन लोक याजेहि राजनीति नागरिक। गगत्तु चाकू विवेत काउके राजनीतिक चेतना-चित्ता किंवा कथा उकारण खेके अधवा वाउवे संविधानसम्बुद्धि पक्किते राजनीतिक विवृति, वाउता, मिहिल, इन्हताल वन्ध, धर्मघट खेके विवृति धाकार उराखार ऊन्ये इकूम-इमकि-इकार-रामला करा याय ना। प्रकाश करवेनहि। करा वाज नीरात देशेर उच्चनगदेव शार्थ। यानसिक अवगतानुसारे य-य यत, यत्तवा, सिक्काल्ल शिक्कीन, अधिकार अनुयायी कथाय, कोजे ओ आचरणे काजेहि शिक्कक-शिकार्यी या गणतान्त्रिक राज्ये य-य आयोजने, मिहिले अधिकार अनुयायी कथाय, कोजे ओ आचरणे अतीते शीप-कंठातानुसारे सब आन्दोलनहि छिल छाता-छातीदेव अकिय, सहयोगिता ओ सरामता निर्त्तर। सडार विविधानिक अधिकार अनुयायी कथाय, कोजे ओ आचरणे अतीते शिक्कार्योदेव उपस्थिति छिल आवश्यक ओ ज़रूरी। आयरा अतीते शीप-कंठातानुसारे सब राजनीतिक कृतिर, कीर्तिर, कुत्तज, चित्त, सपर्वे अकाशे छातीदेव करि। केवल बर्तमानेव बिंद्वा उल्लान आनेपानेव समझेर सरकार ओ सरकार्ये कुपा-करुणा-दया-दाक्षिण्यकारी किछु वृद्धिजीवीर एवं उक्ततर पदे उन्नितिकारी लोकदेव विवेत समकालीन छाती आन्दोलनेव निर्मा उन्ते पाई। ए-ए उत्तावकदेव चाउकारादेव चित्तकालीन शीति ओ अत्याससम्बुद्धि उकारण ओ आचरणमात्र छातीजनीति यातान-सेठेल-सेनावाहिनीरा

ଭାବେରା ଚିମ୍ବିଗଲ୍ଲ ମାଜାନୀତିଶତରୁଣ ସ୍ଥାନେକୁ | କିମ୍ବା ମା ତାଙ୍କ ପତ୍ର— ପାତିକା
ପାଡ଼େ, ମାଜାନୀତିକ ଆଦର୍ଶ— ଉତ୍ସମ୍ବାଦ— ଲକ୍ଷ୍ମୀ ତାଙ୍କ, ମୈତ୍ରିକ— ମାତ୍ରାଜୀତିକ
ମାଜାନୀତି— ହଟାନୀତି— ସୁରକ୍ଷା— ବାଧିତ୍ୟ ଦେଖ, ଶୋଭା, କାଞ୍ଜିକୁ ତାଙ୍କ
ଦେଖେ ଏ କିଂବା ମାନୁଷେର ହେଁ, ନାହେର ପଞ୍ଚ ବିଷେଷକ ତେଜିଯାର ଦିନାତି
ବହୁତା— ମିଛିଲେ, ଆଖ୍ୟାଳନ ପ୍ରଭୃତିରେ ଅଂଶଗ୍ରହିତ ମାନୁଷକ ଦାସିତ ତ ଏହିବ୍ୟା
ବଲେ ଜାନେ, ବୋଲେ ତ ମାନେ ।

ଦ୍ୱାପ ପେଲ ତୋ ଥାର୍ଜନ ଶାସକ ଜିମ୍ବାଟିର ରହିଥାନି ଯେଦିନ ଶ୍ରାଵନେର ଜ୍ଞାତୀୟ ଗ୍ରାଙ୍ଜନୀତିକ ମଳହାଲୋକ ଅନ୍ତଦଶକାଟପେ ଶାରୀ ନିମ୍ନାୟଗର ଓ କର୍ମୀହିସେବେ କାଞ୍ଚ କରାର ଛନ୍ଦ୍ୟ ଦିଲଲାଗ୍ରେ ଅତିଜ୍ଞାନ ବା ପରିଚିତି ଦାନ ଆସିଥିବା ବା ବାଧ୍ୟତାଧର୍ମକ ବଳେ ଯୋଗଣ ଦିଲେନ । ସେମିନ ଧେକେଇ ଛାତ୍ରର ବାସୀନତାର ଦେଶର, ମାଟ୍ରେ, ଯାନୁଷେର ହୟେ ଜ୍ଞାନଗଣେନ୍ତର ଶାର୍ଥ ସାଚେତନ ହୟେ ଶ୍ରୀ କବଲିତ । ଜ୍ଞାନଗଣେନ୍ତର ଜ୍ଞାନ- ଯାଜ- ଗାର୍ଦନ ବିପନ୍ନ । ମିନେ ରାତରେ ଦେଶବାସୀ ନିର୍ବିଶେଷ ଜଣ୍ଡ ଓ ବିପନ୍ନ ଜୀବନଯାପନ କରାରେ । ଏଥନ କି ସେଇ ଯୁନି- ଅସିର ଯୁଗ ଆହେ ଯେ ଯୁଷିକରେ ରାତରେ ଉନ୍ନିତ କରେ, ପରି ଆବାର ଯୁଷିକ କରେ ଦେଖା ଯାବେ । କିନ୍ତୁ ଛାତ୍ରର ଚିନ୍ମଦିନରେ ଗ୍ରାଙ୍ଜନୀତିସାଚେତନ ଥାକେଇ । କେମନ୍ତ ତାଙ୍କୁ ପ୍ରଦ୍ରବ୍ୟ- ପ୍ରଧିକା ପଡ଼େ, ଗ୍ରାଙ୍ଜନୀତିକ ଆଦର୍ଶ- ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ- କାଜେ ତଥା ସତ୍ତା- ମିଛିଲ- ମାନ୍ଦା- କାଢା- ଧାରୀ- ଶାନ୍ତା ଉର୍ଫ କରେ ଦିଲ । ଆଜି ତା ଛାତ୍ର ଗ୍ରାଙ୍ଜନୀତିର ପ୍ରେତିହେଁ, ଅଭ୍ୟାସେ

বিবৃতি, বঙ্গভা-মিহিল, আনন্দলন প্রতিতে অংশথহণ
যানবিক দার্মিত ও কর্তব্য বলে জ্ঞানে, বোঝে ও যানে।
কেননা তামা শিষ্ঠ নয়, কিশোর-তরুণ যুবক-যুবতী এবং
শিক্ষার আলোকথাতে চান্দুশান ও জ্ঞান-বৃদ্ধি-যুগ্মিতি-
বিবেকব্যান। বীজনীতিটে অংশথহণ, কথায়, কাজে ও
আচরণে মাঝনীতিটেনার অভিব্যক্তি দানে রয়েছে
তাদেরও জন্মগত অধিকার গণতান্ত্রিক রাষ্ট্র। কেননা
সোবাপেগ তথা আঠারো বছরের ইলেই সে একটা পূর্ণমানুষ
হিসেবে তোটাধিকার জাত করে। তার মতামত উন্নত পায়
সাংবিধানিকভাবেই।